खेती अपनी संस्कृति

भारत और वैविध्य भरित संस्कृती

"कश्मीर से कन्याकुमारी तक
भारतीय संस्कृति रही वैविध्य भरित।"

भारत, अपना देश एक वैविध्य भरित देश है। रंग, रूप, वेष, भाषा, आदि से विविध होने पर भि, हम भारतीय एक हि मन से भाईचारे के साथ जीते आए हैं और जीते रहे हैं। हम भारतीयों में यह वैविध्य होने पर भी हम 'वसुदेव कुटुम्बकम्' नामक आदर्श जिसका अर्थ है नानात्व या विभिन्नता में एकता है।

भारत का देश-देश, प्रान्त-प्रान्त में हम संस्कृति का बदलाव स्पष्ट देख सकते हैं। गुजरात कि संस्कृति और नागालाण्ट कि संस्कृति में व्यत्यास है और हर्याना और तमिलनाडू में भी फरक है। पर एक चीज़ सुविव्यित है - भारत के हर कोने में भी संस्कृति अतीव पवित्र तथा परिपालित है।

भारतीय संस्कृति और खेती

इस वैविध्य सहित संस्कृति का अनिषेधनीय भाग है 'खेती'। पुरातन काल से हि भारत और भारतीयों का खेती से अटूट रिश्ता है। भारतीयों का प्रधान उद्योग था पुरातन काल में खेती। भारत की मिट्ठी खेती के लिए अत्युत्तम है। फलपुष्ट मिट्ठी के साथ-साथ नदीयों से शुद्धजल का लभ्यता भी खेती के बढाव का कारण रहा।

भारत का हर एक जगह में अलग अलग विभवोंओं का खेती करी जाती है। खेती में भारतीयों का ज्ञान विशिष्ट है। दक्षिण भारत में केरल में सुगन्धव्यञ्जन, चायके पत्ते, केला, रब्बर आदि का खेती चालू है पर तमिलनाडु में फूल, चीनी आदी की खेती मशहूर है। यह वैविध्य मौसम, मिट्टी, जललभ्यता, उष्ण आदी पर आधारित है। उत्तर दिशा कि जगहों पर अन्नाज जैसे पानी की जरूरत अधिक होने वाली उत्पन्न से

गेहूँ, बाजरा, जोवर आदी जरूरती भाजनोत्पन्नों की खेती अधिक करते है। कश्मीर की बर्फ से भरी मौसम आप्पिल की खेती से भरी है।

भारतीयों को किस सादचर्य में क्या-क्या खेती करना है यह अच्छी तरह से जानता है। इस वैविद्य सहित संस्कृती को खेती सुशोभित बनाती है। भारतीय जनता के महत्व भरित प्रवृत्ती का उदाहरण हम एक उदाहरण में स्पष्ट देख सकते है। भारतीय संकल्प में भूमी को माता या देवी के रूप में पूजीत स्थान दिया गया है। भूमी को एक औरत के रूप में माना जाता है। औरतों को हर 28 दिन में 'आर्तव' आ जाता है। उत्तर की ओर रहने वाले भारतीय हर साल में तीन दीन भूमी को दुःख देना या दर्द महसूस कराने वाला ~~प्रवृत्त~~ प्रवृत्ती को त्याग कर देते है। हम मानते है कि तब भूमी देवी का आर्तव का वक्त है। तब हम चलना, खेती-मसूरी करना सब छोड देते है। यह भारतीयों का संपन्न संस्कृती तथा स्त्री संरक्षण-

भूमी संरक्षण मनोभाव स्पष्ट करता है।

संस्कृती संरक्षित है क्या ?

स्वतंत्रता संग्राम के वक्त किसानों के लिए और जन्मभूमि के लिए लडा गया लडाव सविशेष है। अपनी संस्कृती बचाने कि चाह में उन महान लोगों ने अपने-आपको हि बलिदान किया। पर आज नए काल या नए युग में प्रश्चात्य संस्कृती से आकर्षित नौजवान खुद की संस्कृती को बूल जाते है। विदेश जाने केलिए मौका देनेवाले उद्योग के खोज बड चुका है। किसान और खेती को बचाने केलिए अब कोई नहीं है। खेती को अब नलायक समझकर बच्चे पैसे कमाने के तलाश में अंधे हो चुके है।

खेतों में अब नगरवतकरण का हस्तक्षेप भीतिजनक रीती में बड चुका है। खेतों में अब बडे-बडे निर्मितियाँ बन चुके है।

नगरवत्करण के तलाश में संस्कृति संरक्षण हम भूल जाते हैं।

★ खेती का नाश सबका विनाश।

इस रह खेती का नाश से सिर्फ संक संस्कृति का नाश नहीं बल्की हमारा भी नाश हो सकता है। अकाल, दारिद्र आदी दुरवस्था का कारण आसानी से यह हो सकता है। खेती का नाश कृषिविज्ञान का भि नाश होगा। कृषिविज्ञान के नाश से हमारा पुरातन संस्कृती का भी पतन होगा। हमारे नए जमाने के बच्चों को विषरहित भोजन प्रदान करने के लिए खेती जरूरी है।

'कृषि सर्वार्थसाधिका...'

संस्कृत में ऐसा एक सुभाषित है जिसका मतलब है कि कृषी सबकुछ साध्यकरसकती है। इसका महत्व सबको समझाना और खुद समझना

अत्यावश्यक है

* हमारी कृषिसंस्कृती का संरक्षण कैसे कर सकते है।

खेती- अवश्य चीज़ें :-

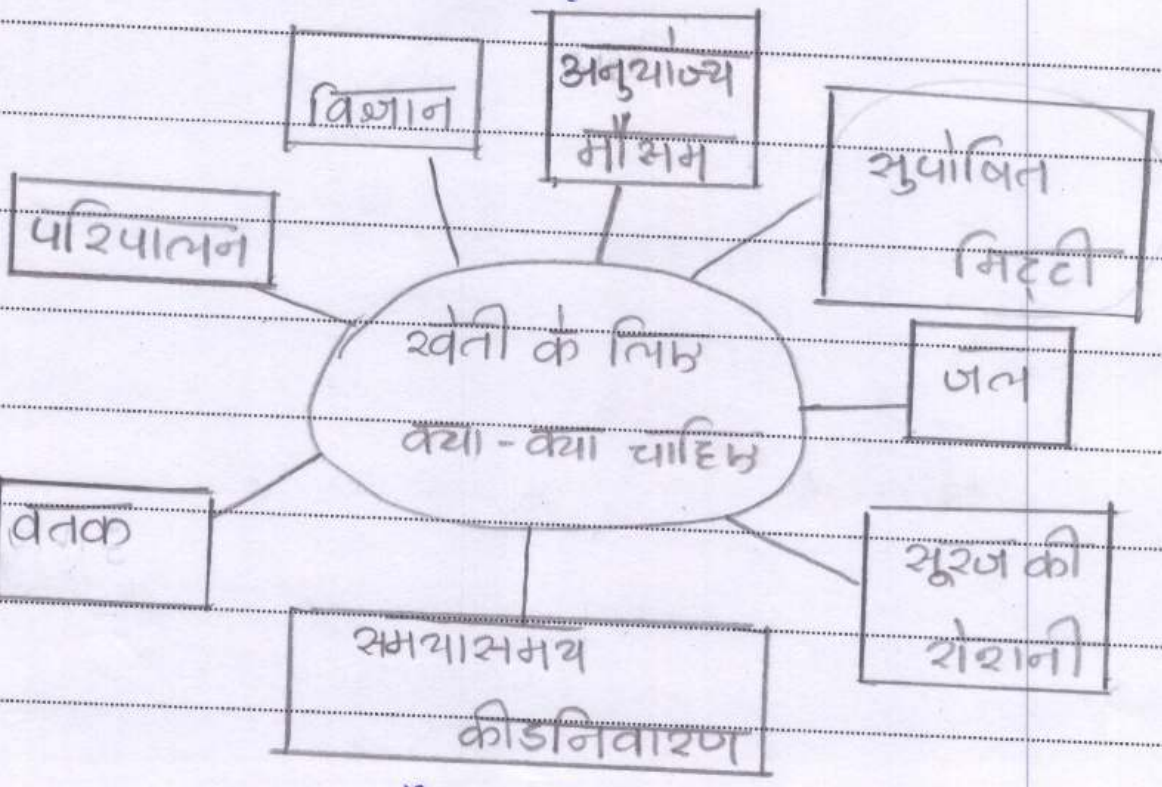

इसमें आज की से ज्यादा मनुष्य के अशास्त्रीय प्रवृत्तियों के करण मलिन हो चुका है, इसका कारण हम ही है। जो वन बचा है उसे संरक्षण करना है।

बच्चों को खेती नया हमारी संस्कृती को बचाने का आवश्यकता समझाना चाहिए। उन्हें खेती करने का कार्यक्रम के बारे में ज्ञान देना है।

कृषी या खेती के लिए अयोज्य जगह आशास्त्रीय प्रवृत्ती से मिट्टाने का कोशिश नहीं करना है।

अपनी व्यस्त जीवितशैली में खुद की जरूरत वाली चीजों की खेती अपने घर में करना चाहिए इसके लिए वक्त ढूँढना चाहिए।

खेती के प्रधान्य का बोध सबको देना है।

उपसंहार

पाचीन काल से ही भारतीय खेती कार्यक्रम में मग्न है। खेती भारत की वैविध्य सहित संस्कृती का भाग बन चुकी है। भारत का मौसम, जल लभ्यता और प्रचीन भारतीयों का कठीनाध्वान शीलना के कारण उन्नती छूचकी

है। पर पाश्चात्य संस्कार का आगमन तथा आलसी का वर्धन खेती को विमुख करने के लिए भारतीयों को प्रेरित करता है। और कृषी का संरक्षण नहीं करते हैं तो कुछ साल बाद भारत की विश्वप्रसिद्ध संस्कृती नामावशेष बनेगा इसलिए कृषी तथा भारतीय संस्कृती को पुनरजीवित करने के लिए हमे प्रयत्न करना पढेगा।

"किसान देव-दूत समान
कृषी खेती समान"

"कृषी हमारी संस्कृती है
उसे बचाए"